P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-12* March- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में धर्म निरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना का अध्ययन

अजीत कुमार यादव
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
आर0बी0एस0 कालेज,
आगरा

सारांश

नई शताब्दी का यह कालखण्ड मानव समाज और उसके भविष्य के लिये शिक्षा के महत्व को नवीन सिरे से समझने की अपेक्षा करता है। मनुष्य समाज में जन्म लेता है और धीरे–धीरे सामाजिक नियमों को अंगीकृत कर उसका वृद्धि और विकास होता है, जिससे वह इस समाज का हिस्सा बन जाता है। परस्पर अंतःक्रियाओं के कारण मनुष्य सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुये भावी भविष्य की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य जिस समाज में जन्म लेता है उसकी प्रक्रियाएं, धार्मिक प्रथाएं और अनुभवों को अपनाने लगता है और जाति धर्म संस्कृति के वातावरण में सम्मिलित हो जाता है। वर्तमान में अनेक सामाजिक तथा आर्थिक प्रभावों के कारण संघर्ष का युग बना हुआ है। और अनेक सामाजिक समस्याओं का जाल बिछा हुआ है जिधर भी दृष्टिपात करते हैं उधर ही धर्म, भाषा, प्रजापति, जाति एवं क्षेत्रीयता के आधार पर अनेक भेद–भाव पाये जाते हैं। बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता, युवा विक्षोभ चेतना की कमी को ध्यान में रखते हुये इस अनुसंधान में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में धर्म निरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना का अध्ययन किया जायेगा चूंकि उपरोक्त समस्यायें राष्ट्रीय एकता एवं प्रगति में बाधक है। अतः अध्ययन में छात्र–छात्राओं की समाज एवं स्वयं के अधिकारों के प्रति क्या दृष्टिकोण है इसे जानने का प्रयास किया जायेगा।

मुख्य शब्द : धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक चेतना।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास को पूर्णता की तरफ अग्रसारित करती है। यह किसी भी देश की बुनियादी आवश्यकता होती है देश का विकास उसकी शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करता है। जिस देश का शिक्षा स्तर एवं शैक्षिक निवेश जितना ज्यादा होता है वह उतना ही तीव्र गति से विकास करता है। अतः हम कह सकते हैं कि श्रेष्ठ और श्रेष्ठतम् राष्ट्रों के विकास में शिक्षा की महती भूमिका होती है। वर्तमान भारत में बहुत सी चुनौतियों के मध्य विश्वविद्यालयी शिक्षा ने काफी तीव्र गति से विकास किया है, परन्तु विकास के अभी और ऊँचे स्तर की आवश्यकता है। भारत एक बहुभाषी बहुधर्मी बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है जहां वर्तमान में अनेक सामाजिक समस्याओं का जाल बिछा हुआ है, जिधर भी दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि युवा विक्षोभ, साम्प्रदायिकता, धर्म, भाषा, जाति, प्रजाति के नाम पर भेदभाव हो रहा है। ऐसी स्थिति में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक चेतना की समझ ही समाज एवं राष्ट्र को सकारात्मक दिशा में आगे ले जा सकती हैं जिससे राष्ट्र विभेदक तत्वों को त्याग कर व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र के कल्याण के लिए धर्म सम्प्रदाय जाति या भाषा के हितों का त्याग करने के लिए तत्पर हो सके। धर्मनिरपेक्षता भारतीय प्रजातांत्रिक मूल्यों की मूल्यवान धरोहर है जिसे शिक्षा के साधनों में सहेजकर रखने से वह पीढ़ी दर पीढ़ी आकार ले रहे भारत के भविष्य, जो कक्षाओं में बढ़ रहे हैं उन तक पहुंच सकेगी और भ्रांतियों और बुराइयो को दूर कर सकेगी। वर्तमान समय में धर्म के नाम पर समाज में अलगाववाद फैल रहा है और समाज में कटुता बढ़ती जा रही है। जिसे दूर करना बहुत ही आवश्यक है। इसके लिये विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता के भाव को रोपित करना एवं सामाजिक चेतना के प्रति सजगता लाना ही शैक्षिक कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य होना चाहिये तभी हमारे विद्यार्थी विश्व में शांति दूत बन सकेंगे और विश्वख्याति को प्राप्त कर सकेंगे।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

स्वतंत्रता प्राप्त करते समय भारत के समक्ष शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन अवसरों की समानता, मानवाधिकारों का रक्षण और तीव्र आर्थिक सुधार जैसी बड़ी समस्या थी। भारत ने भरपूर प्रयास करके इन लक्ष्यों को प्राप्त भी किया परन्तु 1950 के अंतिम दौर में साम्प्रदायिक तत्व काफी सक्रिय हुये जिसके परिणामस्वरूप हिंसा और दंगे लगभग सभी जगहों पर फैलने लगे। इस देश में स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने हिन्दू–मुसलमानों को अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के तराजू में तौलकर दुर्भाग्यपूर्ण राजनीतिक रोटियाँ सेकी जिसने 1980 तक आते–आते भयंकर सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रवाद का रूप ले लिया। ये नकारात्मक दृष्टिकोण व्यापक स्तर तक फैल चुका है। जिससे भारतीय समाज की संरचना ही खतरे में पड़ गयी है। रही–सही कसर धर्म जाति सम्प्रदाय के नाम पर गठित संगठनों ने पूरी कर दी है। जो स्वयं के लाभ के लिये राष्ट्रीय एकता से भी खिलवाड़ कर सकते हैं और जो आतंकवाद, अलगाववाद को बढ़ावा दे रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य में संकीर्ण विचारवाद, रूढ़िवाद धर्मवाद इतने जहरीले हो चुके हैं कि समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था को अन्दर से खोखला करते जा रहे हैं, जिसके जद में हमारे विद्यालय, सामाजिक स्थल, सामाजिक संगठन भी आते जा रहे जिन्हें इन नकारात्मक विचारधारा से दूर रखना होगा, अन्यथा ये हमारे सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ के रख देंगे। वर्तमान परिदृश्य में भारतीय युवा पीढ़ी का पुरातन मूल्यों और आदर्शों में विश्वास कम हुआ है। वह अपने जीवन को अपने ढंग से जीना चाहते हैं और संचालित करना चाहते हैं और जब उनकी राह में रूकावटें आती है तो संघर्ष को तैयार हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश आज भारत में एक ऐसे समाज का प्रादुर्भाव हो रहा है जो धार्मिक उन्माद में शामिल होता है। और समय–समय पर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, सड़कों आदि पर अनुशासनहीनता करता पाया जाता है। अनेक शोध कार्य धर्म निरपेक्षता सामाजिक चेतना पर तो हुए हैं। परन्तु विश्वविद्यालयी स्तर पर छात्रों में इसकी पहुंच कितनी है। इन्हीं विचारों ने शोधार्थी के मन में विचार उत्पन्न किया कि विद्यार्थियों में साम्प्रदायिकता अनुशासनहीनता मूल्यह्रास वैमनष्यता जैसे नकारात्मक घटक चिन्ता व असुरक्षा की भावना एवं सामाजिक समरसता की कमी के कारण हो सकते हैं। इन कारणों को जानने के लिए शोधार्थी ने धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक चेतना जैसे पदों को अपने शोध अध्ययन में शामिल किया है और यह जानने का प्रयास किया कि धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के माध्यम से राष्ट्रीय विकास किस प्रकार किया जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में विश्वविद्यालय से लेकर प्राथमिक स्तर तक विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शांति शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता जैसे मूल्यों को व्यापक स्तर तक पढ़ाया जाये तो उनके व्यवहार एवं चेतना में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा इसी को ध्यान में रखकर इन समस्याओं पर भविष्य में बेहतर कार्य एवं सुधार हो सके, इसलिये इस समस्या का चयन किया गया है।

साहित्यावलोकन

जैन, योगेशचन्द्र (2011) ने अपने निबन्ध लेख ''हमारी सामाजिक समस्यायें'' में साम्प्रदायिकता को सभी समस्याओं के मूल में बताया है। और साम्प्रदायिकता को खत्म करने में धर्मनिरपेक्षता की तरफ अग्रसर होना ही एक सर्वश्रेष्ठ कदम है।

शर्मा, कविता (2012) ने अपने शोध ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता, नैतिक मूल्य एवं सामाजिक समरसता का अध्ययन'' में 1200 विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लिया और निष्कर्षित किया कि केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक समरसता में निम्न स्तर का धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक समरसता में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है।

नजमुदीन (2015) ने अपने शोध ''अ स्टडी ऑफ सेक्युलर एटिट्यिूड अमंग यूथ इन कश्मीर'' में बताया कि धर्मनिरपेक्षता जीवन जीने का एक आसान तरीका है। जिसमें कश्मीरी युवाओं में इसके लिये व्यापक जागरूकता है।

परमार, अमित कुमार (2015) ने अपने शोध ''अ स्टडी आन द कान्सेप्ट ऑफ सेक्युलरिज्म एण्ड राइट टू रिलीजन अन्डर द इण्डियन कान्सटीट्यूशन'' समाज में धर्मनिरपेक्षता होनी चाहिये ओर अवाध रूप से अपने धर्मों का आदर करते हुये दूसरे के धर्मो की इज्जत करनी चाहिये जो हमें संविधान सम्यक प्राप्त होते हैं।

आशा रानी के0 (2016) ने अपने शोध ''इम्पैक्ट ऑफ सेक्युलर मेडिटेशन आन मूड स्टेट्स एण्ड इमोशनल इनटेलिजेन्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स''।

ए0 मीनिस क्रिस्टिनियस एगिलऐट (2003) ने सामाजिक चेतना ललित कला व संगीत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि ललित व संगीत के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति सामाजिक चेतना से सह सम्बन्धित है।

डब्लयू0 ई0बी0 दुहिस (2003) ने अपने शोध ''अफ्रीकी मूल के लोगों की सामाजिक चेतना'' पर प्रकाशित किया और बताया कि आज भी 21वीं सदी में अफ्रीकी मूल के गोरे व काले का भेद विद्यमान है।

सचिलिट्ज, एम0, एम0, वाइटेन, मिलर टू एम (2010) ने अपने लेख पत्र ''वर्डवाइड ट्रान्सफार्मेशन एण्ड द डेवलपमेंट ऑफ सोशल कान्सियसनेस'' में वैश्विक बदलावों में सामाजिक परिवर्तन एवं खत्म होती भ्रांतियों एवं बाधाओं का जिक्र किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्मनिरपेक्षता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

1. H_1 विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्म निरपेक्षता में सार्थक अन्तर होगा।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-12* March- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

2. H_2 विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर होगा।

शून्य परिकल्पना

1. H_{01} विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्म निरपेक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. H_{02} विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध प्रविधि

वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रयुक्त अनुसंधान में किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में इलाहाबाद जिले के विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को चुना गया है।

शोध में चर

सम्बन्धित शोध में दो चर हैं, आश्रित एवं स्वतंत्र आश्रित चर, सामाजिक चेतना, धर्म निरपेक्षता स्वतंत्रत चर में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के छात्र–छात्रायें।

समष्टि / जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इलाहाबाद शहर के विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को समष्टि के रूप में रखा गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं के धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये, शोधार्थी द्वारा क्रमशः अंशु मेहता एवं दुर्गानन्द सिंह (2011) द्वारा निर्मित धर्म निरपेक्षता अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है एवं सामाजिक चेतना के लिये स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रयुक्त उपकरण विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों पर प्रशासित किये जायेंगे इस मापनी में 6 बीमाओं के आधार पर कुल 35 प्रश्न है। जो उच्च शिक्षा में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्म निरपेक्षता की अभिवृत्ति का मापन करता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। उद्देश्यों के अनुसार इलाहाबाद जिले के सदर तहसील के केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राज्य विश्वविद्यालय के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

परिकल्पना

H_1 विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्म निरपेक्षता में सार्थक अन्तर होगा।

शून्य परिकल्पना

H_{01} विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में धर्मनिरपेक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–1

अभियोग्यता	विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र N=100		विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रायें N = 100		D	σ_D	t
	Mean	S.D.	Mean	S.D			
सामाजिक चेतना	142.41	16	126.06	12.19	16.35	2.011	7.956
निष्कर्ष	$H_2 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 स्तर पर स्वीकृत $H_1 : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 स्तर पर अस्वीकृत						

सार्थकता स्तर = 0.05 पर table point 1.98

रेखाचित्र–1.1
छात्र–छात्राओं की धर्मनिरपेक्षता प्रदर्शित करता रेखा चित्र

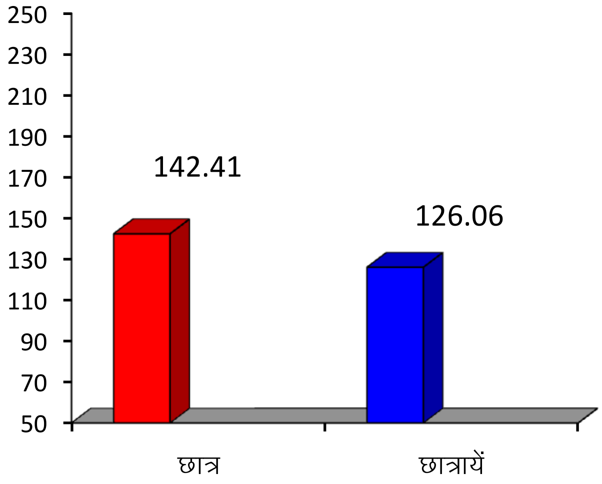

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-12* March- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

व्याख्या

क्योंकि t का परिगणित मान 7.956 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए 0.5 स्तर पर 1.98 से अधिक है तथा 0.05 स्तर पर t का मान सार्थक है अतः शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति 130 से अधिक है एवं छात्राओं की 130 से कम अतः छात्र छात्राओं की अपेक्षा जयादा धर्मनिरपेक्षता अभिवृत्ति रखते हैं।

शोध परिकल्पना

H_2 विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर होगा।

शून्य परिकल्पना

H_{02} विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–2

अभियोग्यता	विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र N=100		विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रायें N = 100		D	σ_D	t
	Mean	S.D.	Mean	S.D			
सामाजिक चेतना	158	32.98	147	33.79	11	4.72	2.33
निष्कर्ष	$H_2 : \mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 स्तर पर स्वीकृत $H_{02} : \mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 स्तर पर अस्वीकृत						

सार्थकता स्तर = 0.05 पर table point 1.98

रेखा चित्र–2.1

छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना प्रदर्शित करता रेखा चित्र

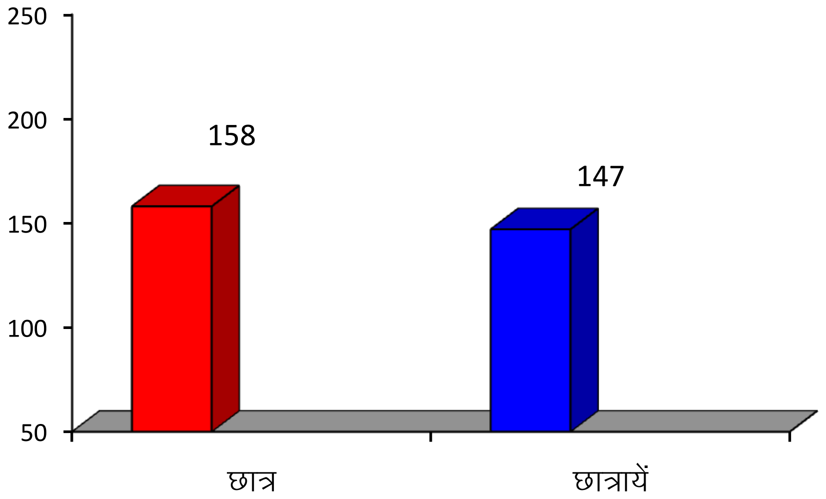

व्याख्या

क्योंकि t का परिगणित मान 2.33 है जो कि द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए 0.5 स्तर पर सारणी का मान 1.98 से अधिक है तथा 0.05 स्तर पर t का मान सार्थक है। अतः शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति 150 से ज्यादा है एवं छात्राओं की 150 से कम अतः छात्रों में सामाजिक चेतना का भाव छात्राओं की अधिक होगा।

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य में जहां हमने गगनचुम्बी विकास कर अपने जीवन को उच्च बनाने का कार्य किया है वहीं पर कुछ दिशाओं में अभी और कार्य करने की आवश्यकता है। आज मशीनी युग में हम कक्षाओं में मशीनी मानव तैयार कर रहे हैं। जिनका मूल उद्देश्य शिक्षा प्राप्त कर जीवकोपार्जन करना रह गया है। कुछ विद्यालयों में अधूरी सामग्री एवं सूचनाओं की कमी के कारण इनमें व्यापक हताशा है और भौतिक वातावरण में अपने आपको असमायोजित पाते हैं जिसके कारण बहुत आसानी से पथभ्रमित होकर अनुशासनहीनता, समाज विरोधी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं। चूंकि विद्यार्थी ही राष्ट्र निर्माणकर्ता है अतः इन्हें कक्षाओं में शांति शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाये जिसमें सामाजिक चेतना धर्मनिरपेक्षता एवं स्वयं के अधिकारों की जानकारी दी जाती है। आज जो मानव अलगाववाद की स्थिति बनी है उसे व्यापक स्तर से समझने की आवश्यकता है इसके लिए सह अस्तित्व .सहिष्णुता व भाईचारे की भावना को पोषित करके अलगाववाद, आतंकवाद व सम्प्रदायवाद की कलुषित दुर्भावनाओं को समाप्त करना होगा। जिससे सम्पूर्ण मानवता को अक्षुण्ण रखने और राष्ट्र निर्माण में मदद मिल सके।

सुझाव

सुझाव स्वरूप हम कह सकते हैं कि धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना का क्षेत्र बहुत बड़ा है और शोध को अखिल भारतीय स्तर पर करना होगा जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों ये इसकी पहुंच कितनी है। इसे समाज के अन्य वर्गों पर भी किया जा सकता है। सामाजिक जागरूकता एवं सर्वधर्म समभाव के लिये व्यापक जन जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिये अन्तर्विश्वविद्यालयी परिचर्चा, मैत्री खेल प्रतियोगिता, राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया जाना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आहूजा, राम (1997), भारतीय समाज, जयपुर : रावत पब्लिकेशन।*
2. *अदावल, एस. एवं माधवेन्द्र उनियाल (1982), भारतीय शिक्षा की समस्याऐं तथा प्रवृत्तियां, लखनऊ : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।*
3. *चन्द्र, विपिन (1996), आधुनिक भारत में सम्प्रदायिकता, नई दिल्ली : ब्लैक स्वान पब्लिकेशन*
4. *गुप्ता, मोतीलाल (2013), भारत के समाज, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
5. *गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2013), शिक्षा समाजशास्त्र, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
6. *गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2013), शिक्षण कला, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
7. *कश्यप, सुभाष (2006), हमारा संविधान, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया।*
8. *लाल, रमन, बिहारी (2002), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन।*
9. *लाल, रमन बिहारी (2014), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन*
10. *गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2014), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
11. *पाण्डेय, रामशकल (1995), भारतीय शिक्षा–दशा और दिशा, इलाहाबाद : होराईजन पब्लिकेशन।*
12. *मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ (2014), भारतीय समाज एवं संस्कृति, दिल्ली : विवेक प्रकाशन*
13. *मिश्रा, वी0के0 एवं आर0के0 मोहन्ती (2002), ट्रेण्डस एण्ड इस्यूस इन इण्डियन एजुकेशन, मेरठ : लायल बुक डिपो।*
14. *गुप्ता, एस0पी0 एवं अल्का गुप्ता (2016), शिक्षा के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
15. *गुप्ता, एस0पी0 एवं अल्का गुप्ता (2016), शिक्षा के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
16. *सिंह, अरूण कुमार (2002), मनोविज्ञान–समाजशास्त्र तथा शोध विधियाँ, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।*
17. *सारस्वत, मालती (2007), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।*
18. *गुप्ता, एस0पी0 (2013), अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।*
19. *सिंह, कर्ण (2012), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, लखीमपुर खीरी : गोविन्द प्रकाशन।*
20. *रूहेला, एस0पी0 (2010), शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन*
21. *Yaniv Roznai Citing Domenic Marbaniang in "Negotiating the Eternal: The paradox of Entrenching Secularism in Constitutions" Michigan state law review 253, 2017, P: 324*
22. *D.L. Munby (1963), The idea of a Secular Society; Londan Oxford University press 1963, pp. 14-32*
23. *Ira.M.Lapidus (act 1975) The Sepration of State and Religion in the Development of Early islamic society" international Jaurnal of Middle East Studies - 6(4) p. 363-385.*
24. *Schitz M.M., Vieten .c., Miller E.M.(2010) "World view Transformation and the Development of Social Consciousness: Jaurnal of Consciousness Study 17 : pp 18-36*
25. *http://shodhganga.inflibnet.ac.in*
26. *http://www.educationindia.net*
27. *http://shodhgangotri.inflibnet.ac.in*
28. *http://www.reseurahgate.net/*
29. *http://www.humonrights.education.info*
30. *http://www.hve2012.uj.edu.pl.*
31. *Shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/70734/13/13_summary.pdf*
32. *http://hdl.handle.net/10603/33282*
33. *http://hdl.handle.net/10603/77961*
34. *http://hdl.handle.net/10603/19442*